ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

महिला आत्मकथा और नारी विमर्श

–डॉ. गिरीश काशिद

हर विमर्श अपनी प्रकृति में सतत प्रयोगधर्मा और परिवर्तनशील होता है। नारी विमर्श पहले आंदोलन के रूप में उभरा और बाद में विचारधारा के रूप में तब्दील हुआ। स्त्रीवाद यह पितृसत्ता के विरूद्ध आंदोलन के रूप में शुरू हुआ। नारी विमर्श नारी के अधिकार हेतु खड़ा हुआ आंदोलन है। इसे नारीवाद भी कहा गया है। इसमें पितृसत्तात्मक और लिंग–भेद पर आधारित मान्यताओं के प्रति विद्रोह है। इसकी जड़े अठारहवीं सदी के मानवतावाद और औद्यौगिक कांति में मिलती है। नारी विमर्श के उदय को लेकर मतभिन्नता पाई जाती है। एक मत इसे पाश्चात्य उपज मानता है तो दूसरा मत इसके सूत्र भारतीय परंपरा में खोजता है। भारतीय संदर्भ में इसके सूत्र मिलते भी है।

पाश्चात्य देशों में नारी विमर्श विभिन्न रूप में मिलता है। वहॉ इसका उत्स भारत के पहले हुआ और इसकी गति भी तीव्र मिलती है। प्रारंभ में महिलाएँ कानून सुधार का आग्रह करती थी। आज का नारीवाद अपने में कई संदर्भों को समेट रहा है। पाश्चात्य देशों में नारी विमर्श वहॉ के प्रश्न और परिस्थिति के अनुरूप मिलता है। वहॉ नारी विमर्श की मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी और उदारमतवादी यह तीन विचारधाराएँ मिलती है। सीमान द बुवा की 'सेकंड सेक्स' रचना नारी विमर्श को गति देनेवाली साबित हुई।

भारत में नारीवादी आंदोलन का सूत्रपात पंडिता रमाबाई और सावित्रिबाई फुले, ताराबाई शिंदे से हुआ। ताराबाई शिंदे सन् 1882 में अपने 'स्त्री–पुरूष तुलना' ग्रंथ में नारी के समान अधिकार की मॉग करती है। उनके लेखन का उद्देश्य ही यह रहा है। वे लिखती है, "जिस ईश्वर ने यह अजब सृष्टि की रचना की है उसीने स्त्री–पुरूष को निर्माण किया। बावजूद सभी तरह के दुर्गण स्त्री में ही होते हैं अथवा जो दुर्गुण स्त्री में होते हैं वे ही पुरूष में है या नहीं यह स्पष्टतः दिखाने के उद्देश्य से यह छोटा निबंध मैंने देश की बहनों के अभिमान के तहत लिखा है।"[1] भारत में उन्नीसवीं सदी के नवजागरण के दौरान नारी विमर्श केंद्र में आया। आरंभिक नारी विमर्श उच्च और मध्य वर्ग तक सीमित था महात्मा फुले ने इसे बहुजन समाज तक पहुँचाया। आज भारत में नारीवाद स्त्री की समानता की वकालत करता है। पितृसत्ता का विरोध करता है।

भारतीय साहित्य पर परंपरा से पितृसत्ता का वर्चस्व रहा। इसमें पुरुषों की दृष्टि से नारी का चित्रण हुआ। आदिकाल में कोई महिला रचनाकार का उल्लेख नहीं मिलता। मध्यकाल में मीराबाई ने अपने व्यवहार और साहित्य के माध्यम से पुरुषसत्ता को चुनौती दी। इस संदर्भ में मीराबाई को पहली विद्रोही कवयित्री कहना होगा। उसके बाद रीतिकाल में तो स्त्री का केवल श्रृंगार के रूप में चित्रण हुआ। नवजागरण काल में नारी विमर्श नया तेवर लेता है। महादेवी वर्मा का इसमें अहं योगदान है। उन्होंने अपने लेखन से भारतीय स्त्री के उपेक्षित पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने 'श्रृंखला की कडियॉ' के माध्यम से अभिशप्त नारी जीवन को प्रस्तुत किया। वर्तमान में भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श प्रगल्भ

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

2. सं. कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्श के विविध पहलू, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009, पृ. 173(राष्ट्रीय परिदृश्य और स्त्री विमर्श, डॉ. विजयबहादूर त्रिपाठी)
3. सं. ममता कालिया, उत्तर प्रदेश, मई, 2003, पृ. 210
(अपना फैसलाः मुक्ति का फैसला, मैत्रेयी पुष्पा)
4. अर्चना वर्मा, अस्मिता–विमर्श का स्त्री स्वर, मेधा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 157
5. डॉ. सुमन राजे, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2006, पृ. 310
6. वीणा आलासे, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, प्रथम संस्करण, 2007, तीन आत्मकथा, प्रास्ताविक
7. सं. डॉ. धर्मवीर, सीमंतनी उपदेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2008 पृ. 64
8. कृष्णा अग्निहोत्री, और..और...औरत,सामायिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010, पृ.21
9. पद्मा सचदेव, बूँद बावड़ी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1999, पृ. 247
10. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुंडल बसै, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2009, पृ. 289
11. रमणिका गुप्ता, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम पेपरबैक संस्करण, 2010, पृ. 16
12. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2008, पृ. 258

———————

डॉ. गिरीश काशिद
सहयोगी प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
श्रीमान भाऊसाहेब झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी,
जिला–सोलापुर महाराष्ट्र

Copyright©authors